The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 2 | July-September 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

भारत में वर्ष 2023-24 में आर्थिक मंदी की संभावना

डॉ राजेश मौर्य
सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र, शासकीय नेहरू महाविद्यालय,सबलगढ़ जिला मुरैना
Email-id:- dr.rajeshmourya1973@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Article History
Received : September 15, 2023
Accepted : September 26, 2023

Kevwords :
आर्थिक मंदी, वैश्विक आर्थिक मंदी, भारत में शून्य आर्थिक मंदी

ABSTRACT

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में, यदि मुद्रास्फीति या मंदी की समस्या उत्पन्न होती है तो उस देश की अर्थव्यवस्था का धीमा होना या गिरना निश्चित होता है। यह एक ऐसी अवस्था है, जिसमें आय, उत्पादन, उपभोग, निवेश, बेरोजगार का स्तर गिर जाता है तथा देश में भयंकर आर्थिक तवाही उत्पन्न कर देती है। विश्व के विभिन्न अर्थशास्त्रियों तथा आर्थिक नीति निर्माताओं का कहना है कि आर्थिक मंदी या मुद्रास्फीति उस समय निर्मित होती है, जब देश का सकल घरेलू उत्पाद या आर्थिक विकास दर, दो या दो से अधिक तिमाहियों में भारी गिरावट उत्पन्न कर देती है। विश्व के विभिन्न आर्थिक नीति निर्माताओं ने यह भविष्यवाणी की है कि वर्ष 2023 में एक वैश्विक मंदी आने की संभावना है जिसकी वजह पिछले कुछ वर्षों से विश्व में बढ़ता वैश्विक संकट (कोविड-19), रूस-यूक्रेन में जारी युद्ध और उभरता हुआ वैश्विक खाद्य संकट, विश्वव्यापी, आर्थिक मंदी या मुद्रास्फीति की समस्या को उत्पन्न कर सकता है। लेकिन यह आश्चर्य की बात है कि भारत इस वैश्विक मंदी से सुरक्षित रहेगा, ऐसा विश्व के विभिन्न आर्थिक मंचो (विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट) ने कहा है और प्रमाणित भी किया है कि इसका (वैश्विक मंदी) भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोई भी प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होगा क्योंकि भारत एक ऐसा देश है, जहां की अधिकांश आबादी युवा वर्ग है। आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि यहां लगभग 67% आबादी 15 से 64

आयु वर्ग के बीच है। इसके अलावा भारत में उच्च-मध्यम आय वर्ग का प्रतिशत भी अधिक है, जिसमें खर्च करने की प्रवृत्ति सर्वाधिक है। जब व्यय करने की प्रवृत्ति अधिक होगी, तो निवेश, विशेष रूप से बाहरी निवेश, में वृद्धि होगी और अर्थव्यवस्था सतत रूप से अपने आर्थिक विकास के पथ पर बढ़ती रहेगी। यही ऐसे कारण है, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्विक या मुद्रास्फीति का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह शोध पत्र वर्ष 2023 में निर्मित होने वाली विश्वव्यापी आर्थिक मंदी या मुद्रास्फीति पर आधारित है। जिसमें हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव क्यों नहीं पड़ेगा?, इसके पीछे क्या कारण है?

प्रस्तावना:-पिछले कुछ वर्षों से विश्व की तमाम अर्थव्यवस्थाए भयानक संकट का सामना कर रही हैं, फिर वह चाहे प्राकृतिक आपदा हो या फिर मनुष्य द्वारा कृत्रिम रूप से उत्पन्न की गई हो, अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। जैसे:-कोरोना, वायरस महामारी, रूस-यूकैन संघर्स, प्राकृतिक तेल का संकट आदि एक तरफ कोविड-19 जैसी गंभीर समस्या ने लोगों को कठिन परिस्थितियों में जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया था, तो दूसरी तरफ रूस-यूक्रेन युद्ध ने प्राकृतिक संसाधनों से लेकर अर्थव्यवस्था तक को तहस-नहस कर दिया है। ऐसी परिस्थितियों में अर्थव्यवस्था का गिरना स्वभाविक है।

अर्थव्यवस्था को धीमा या गिराने में, जिस आर्थिक कारक का महत्वपूर्ण योगदान होता है, तो उसे मंदी कहा जाता है, जिसमें आय, उपभोग, उत्पादन, निवेश और रोजगार जैसे घटक शामिल होते हैं, जो इन सभी को आर्थिक संकट की स्थिति या गिरावट की अवस्था में पहुंचा देता है। **एक वेबसाइट के अनुसार-**आर्थिक संकट या मंदी, उसे कहा जाता है, जिसमें राष्ट्रीय आय से लेकर सकल घरेलू उत्पाद, तरलता का सूखना, (नगद

मुद्रा) और संपत्ति एवं शेयर बाजार की कीमतों को धीमा या गिरावट की स्थिति उत्पन्न करना आदि शामिल है।(1)

विश्व के विभिन्न लेखकों या अर्थशास्त्रियों द्वारा यह अनुमान लगाया जा रहा है कि वर्तमान वर्ष अर्थात (2023) देश में आर्थिक मंदी या संकट की स्थिति सृजित हो सकती है जिसके लिए ऊर्जा संकट, रूस-यूक्रेन संघर्ष, रुपए के गिरने के कारण मुद्रास्फीति का बढ़ना, ब्याज दरें तथा कोविड-19 महामारी आदि कारक जिम्मेदार हैं। आपको ज्ञात होना चाहिए कि अभी हाल ही में दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश संयुक्त राज्य अमेरिका, एक अलग प्रकार का आर्थिक संकट या मंदी की समस्या से जूझ रहा है, जिसके बारे में यह कहा जा रहा है कि इसका प्रभाव विश्व के अधिकांश देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर दृष्टिगोचर हो सकता है।

भारत, जो कि एशिया महाद्वीप में स्थित एक बड़ा राष्ट्र है, अमेरिका में उत्पन्न हुई मंदी से गंभीर रूप से प्रभावित हो सकता है। **एक वेबसाइट ने यह दावा किया है कि- वर्ष 2023 में भारत में आर्थिक संकट या मंदी के 50-50% अवसर हैं, जिसका कारण यूरोप, अमेरिका, जापान और चीन में बढ़ती अनिश्चितता नकारात्मक रूप से वर्ष 2023 में मंदी की समस्या उत्पन्न कर सकती है।(2)**

क्या विश्व के इन देशों में होने वाली आर्थिक मंदी, भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती है? क्या तेजी से बढ़ती भारतीय अर्थव्यवस्था को गंभीर आर्थिक संकट की स्थिति में पहुंचा सकती है, आदि?, आइए इन सब सवालों का जवाब प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

आर्थिक मंदी क्या है?

सामान्य शब्दों में किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में आर्थिक मंदी की समस्या उसके वित्तीय संकट से जुड़ी हुई है, जो अर्थव्यवस्था में कई प्रकार की समस्याओं जैसे:-

मुद्रास्फीति, कीमतों में वृद्धि, सरकारी राजस्व की कमी व मौद्रिक नीति की प्रभावशीलता को कम करना आदि उत्पन्न करती है।

विश्व के विभिन्न विद्वानों तथा अर्थशास्त्रियों का कहना है कि यह समस्या (आर्थिक मंदी) किसी भी देश की अर्थव्यवस्था में उत्पन्न हो सकती है क्योंकि यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जो मांग और पूर्ति में बेमेल स्थिति के कारण सृजित होती है।

अर्थशास्त्र की भाषा में आर्थिक मंदी वह प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत देश का सकल घरेलू उत्पाद या विकास दर, दो या दो से अधिक तिमाहियों में भारी गिरावट या धीमी स्थिति उत्पन्न कर देती है।(3) यह स्थिति आमतौर पर अर्थव्यवस्था में काफी लंबे समय तक अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण घटकों में गिरावट के परिणामस्वरुप सृजित होती है।

एक जर्मन अर्थशास्त्री एडल्प वैगनर के अनुसार-आर्थिक मंदी या संकट, एक ऐसी अवस्था है, जिसमें उद्यमी मुख्य रूप से अपने ऋणों का भुगतान करने में असमर्थता व्यक्त करते हैं।(4)

उपरोक्त सभी परिवारों के बावजूद आर्थिक नीति निर्माताओं व अर्थशास्त्रियों का कहना है कि आर्थिक मंदी या संकट को मापने का कोई निश्चित पैरामीटर या मापदंड नहीं है जिसका कारण अर्थव्यवस्था में पाए जाने वाले विभिन्न घटक जैसे:-आय, उपभोग, उत्पादन, रोजगार, निवेश आदि हैं। इनमें से यदि किसी भी घटक में कोई भी विचलन या कमी की समस्या उत्पन्न होती है, तो आर्थिक मंदी या संकट उत्पन्न हो सकता है।

आर्थिक मंदी या संकट की समस्या के लिए किसी भी देश द्वारा लिया गया भारी ऋण भी जिम्मेदार है, परंतु यह इस बात पर निर्भर करता है कि देश द्वारा लिया गया ऋण, उसके द्वारा सृजित की गई आय से अधिक है या कम, यदि अधिक है, तो वह देश आसानी से अपने ऋणो की अदायगी कर सकता है, लेकिन यदि कम है, तो उसके लिए वित्तीय दृष्टि से घातक स्थिति हो सकती है क्योंकि उसके द्वारा सृजित की गई

आय इतनी अधिक नहीं है, कि वह ऋणो का भुगतान कर सके। ऐसा ही हमारे पड़ोसी देश, श्रीलंका में हुआ था। जहां की सरकार ने अपनी आय से कई गुना ऋण चीन से प्राप्त किया था और अदायगी के अभाव में वह आर्थिक संकट या मंदी की स्थिति में चला गया था। हालांकि श्रीलंका की ऐसी स्थिति के लिए केवल यही कारण जिम्मेदार नहीं था बल्कि सरकार (गोटबाया राजपक्षे) द्वारा पुनः सत्ता में आने के लिए उसके द्वारा कर में छूट या सब्सिडी की घोषणा करना भी जिम्मेदार थी, जिसके परिणामस्वरूप राजकोषीय घाटा कई गुना बढ़ गया। अर्थात सरकार (श्रीलंका) के पास इतना अधिक विदेशी मुद्रा भंडार नहीं था, कि वह अपने आयतों का भुगतान कर सके। अभी हाल ही में, श्रीलंका में उत्पन्न हुआ है, यह संकट अन्य देशों के लिए एक विशिष्ट उदाहरण बन सकता है कि कैसे व किस प्रकार?, कोई देश, आर्थिक मंदी या संकट की अवस्था में पहुंच सकता है

इस प्रकार कहा जा सकता है कि किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिए आर्थिक मंदी या संकट की स्थिति एक भयानक समस्या है।

वर्ष 2022-23 में वैश्विक मंदी की स्थिति

पिछले कुछ वर्षों में, जो हलचलें या समस्याएं (तनाव) की स्थिति सृजित हुई है, उसे ध्यान में रखते हुए यह कहा जा रहा है कि वर्तमान वर्ष 2023 में एक प्रकार की वैश्विक मंदी की समस्या उत्पन्न हो सकती है क्योंकि जिस प्रकार से वैश्विक समस्याएं जैसे:-(कोविड-19) महामारी, रूस-यूक्रेन संघर्ष, श्रीलंका में आर्थिक संकट और पाकिस्तान जैसा देश कंगाली एवं आर्थिक तबाही से गुजरती हुई अर्थव्यवस्था इत्यादि वैश्विक मंदी का मुख्य कारण बन सकती है। **विश्व बैंक की नवीनतम रिपोर्ट (वैश्विक आर्थिक मंच) के अनुसार-**पिछले कुछ वर्षों से, रूस-यूक्रेन में, जो संघर्ष जारी है, उसकी वजह से वैश्विक अर्थव्यवस्था नाजुक मोड़ से गुजर रही है और मुद्रास्फीति तथा ब्याज दरों में वृद्धि हुई है(5) जिसमें संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्थाओं में तेल व खाद्य संकट की समस्याएं

उत्पन्न कर दी हैं। आज, जो खाद्य संकट अर्थात भोजन के प्रभाव में बाधा उत्पन्न हुई है, उसके लिए केवल रूस-यूक्रेन संघर्ष ही जिम्मेदार नहीं है बल्कि कुछ देशों द्वारा अपने निर्यात पर लगाया गया प्रतिबंध भी जिम्मेदार है। **गेओर्गिएवे क्रिस्तालिना, गीता गोपीनाथ और केला पज़र्बसिओग्ले (2022) में अपने लेख में उल्लेख किया है कि-**विश्व के लगभग 30 देशों ने अपने देश में बढ़ती घरेलू कीमतों पर अंकुश लगाने के लिए पिछले साल खाद और ऊर्जा क्षेत्र में निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था, जिससे मुद्रास्फीति या मंदी निर्मित हुई थी(6) कोरोना वायरस महामारी, जिसने संपूर्ण विश्व में मानव विनाश के संकेत प्रस्तुत कर दिए थे, मैं भी वैश्विक अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से (आर्थिक मंदी या संकट) की अवस्था में पहुंचा दिया था। परंतु इसको (कोविड-19) और बढ़ावा देने में कोरोना महामारी का उद्गम स्थल चीन का बड़ा हाथ रहा था। दरअसल चीन ने संपूर्ण विश्व को कोविड-19 नीतियों में ढील देकर, यह कहा था कि, हमारे यहां शून्य कोरोना पीड़ित या संक्रमित लोग हैं जिसका घातक परिणाम यह हुआ कि यूरोप और अमेरिका जैसे देशों में यह महामारी खतरनाक हो गई थी। इसका अर्थव्यवस्था पर घातक प्रभाव पड़ा था। श्रीलंका, जोकि एशिया महाद्वीप का एक छोटा, खूबसूरत देश है, मैं एक अलग प्रकार का आर्थिक संकट उत्पन्न हुआ था। ऐसा अनुमान है कि श्रीलंका सरकार द्वारा कर में छूट या सब्सिडी और बाहरी देशों, विशेष रूप से चीन से व्यापक पैमाने पर लिया गया ऋण जिम्मेदार था, जिसे चुकाने में असफल सिद्ध हुआ और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा था।

यदि हम वैश्विक स्तर की मंदी को आंकड़ों की दृष्टि से देखें तो पता चलता है कि विश्व की अनेक वैश्विक वित्तीय एजेंसियों ने यह घोषणा की है कि वर्ष 2023 में एक वैश्विक मंदी की संभावना है। **ब्रिटिश सलाहकार की वैश्विक वार्षिक आर्थिक मंच के अनुसार-**वर्ष 2022 में पहली बार वैश्विक अर्थव्यवस्था 100 ट्रिलियन डॉलर से भी अधिक हो जाएगी, लेकिन यह अर्थव्यवस्था के लिए खतरे की घंटी है क्योंकि अधिकांश देशों की सरकारें बढ़ती लागत के खिलाफ संघर्ष करना जारी रखेंगे, जिससे वर्ष 2023 में वैश्विक

मंदी की संभावना उत्पन्न हो सकती है।(7) इसी प्रकार **ब्लूमवर्ग की एक रिपोर्ट के अनुसार-**वर्ष 2023 में दुनिया की एक तिहाई से अधिक अर्थव्यवस्थाएं ध्वस्त हो जाएंगी क्योंकि इस वर्ष (2023) वैश्विक जीडीपी में लगभग 25% संभावना है कि जी.डी.पी 2% से भी कम हो जाएगी(8) जो कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक विश्वव्यापी मंदी की स्तिथि को दर्शाती है

इस प्रकार की स्थिति क्यों उत्पन्न होगी?, तो इसके बारे में विभिन्न वैश्विक आर्थिक नीति निर्माताओं का कहना है कि विश्व की विकासशील अर्थव्यवस्था में भारत एक मजबूत आर्थिक शक्ति के रूप में आगे बढ़ रही हैं, जबकि विकसित देशों की अर्थव्यवस्था में पूर्व की भांति ही संचालित हैं। ऐसी स्थितियों में भारत तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था साबित हो रहा है। कुछ साक्ष्य बताते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में भारत का अमेरिका के साथ तेजी से निर्यात में वृद्धि हुई है। हालांकि इस निर्यात के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था भी प्रभावित हुई, लेकिन फिर भी भारत गंभीर वित्तीय संकट से उबरने में कामयाब रहा है। इसके अलावा विश्व के 2 सबसे बड़े देश, अमेरिका व यूरोप, गंभीर बैंकिंग संकट से जूझ रहे हैं, जिससे विश्वव्यापी मंदी की संभावना बढ़ रही है।

ब्लूमबर्ग ने अभी हाल ही में एक मंदी पैरामीटर बनाया है, जिसके द्वारा विश्व के कौन-कौन से देशों में वर्ष 2023 में मंदी या मुद्रास्फीति की कितने प्रतिशत स्थिति होगी, को दर्शाया है।

वर्ष 2023 में विश्व के विभिन्न देशों में मंदी या मुद्रास्फीति की संभावना।

क्र.	देश	मुद्रास्फीति की दर
1.	न्यूजीलैंड	70%
2.	संयुक्त राज्य अमेरिका	65%
3.	कनाडा	60%
4	यूनाइटेड किंग्डम	75%

5	ऑस्ट्रेलिया	40%
6	ब्राजील	15%
7	दक्षिण अफ्रीका	45%
8	मेक्सिको	27%
9	चीन	12%
10	सऊदी अरब	5%
11	इंडोनेशिया	2%
12	स्विट्जरलैंड	25%

Source:-India Has Zero Probability of Falling in to Recessions in 2023-Report. (www.organiser.org) 18 April 2023.

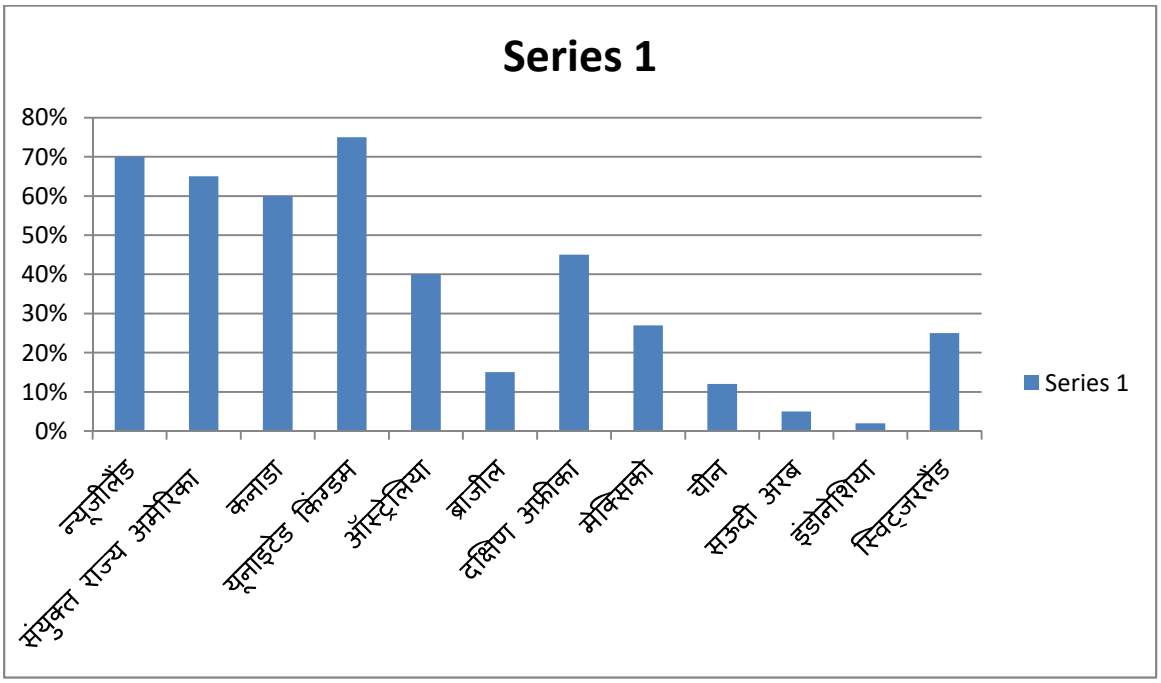

विश्व के किन देशों में इतनी अधिक मुद्रास्फीति या मंदी के बावजूद यह कहा जा रहा है कि **भारत में मंदी शून्य रहने की संभावना है(9),** जिसका कारण विश्व की अनेक आर्थिक मंच संबंधित एजेंसियों द्वारा अर्थव्यवस्था के संबंध में अनुकूल रिपोर्ट प्रस्तुत करना है। **अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा वैश्विक आर्थिक विकास के अनुमानों के अनुसार-** वर्ष 2023 में भारत में मुद्रास्फीति 5.9% रहने की संभावना व्यक्त की है।(10)

वैश्विक एजेंसियों की अनुकूल रिपोर्ट के साथ-साथ भारतीय अर्थव्यवस्था के नीति आयोग ने भी भविष्यवाणी की है कि भारतीय अर्थव्यवस्था को मंदी या मुद्रास्फीति से बचाने के लिए हमारे पास कई नीतियां एवं योजनाएं हैं। नीति आयोग के उपाध्यक्ष **श्री राजीव कुमार जी का कहना है कि-**वर्ष 2023-24 तक भारत अपनी अर्थव्यवस्था को 6% से 7% तक बढ़ा देगा।(11) उन्होंने (राजीव कुमार) यह भी कहा कि अब हम आयातित सामानों पर कम भरोसा या कम करने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे हमारे पास पर्याप्त मात्रा में विदेशी मुद्रा भंडार होगा और अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसी भविष्यवाणी को ध्यान में रखते **हुए विश्व बैंक ने भी कहा है कि-**भारतीय अर्थव्यवस्था वर्ष 2023 तक अनुमानित रूप से 6.5% की विकास दर से तेजी से बढ़ेगी(12) जबकि विश्व बैंक ने वैश्विक स्तर पर आर्थिक मंदी की स्थिति व्यक्त की है। इस दृष्टि से विश्व के अनेक बाजार विश्लेषकों का मानना है **कि यह अर्थव्यवस्था के विकास की दृष्टि से भारत का दशक हो सकता है।(13)**

भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में इस प्रकार की संभावनाएं क्यों व्यक्त की जा रही हैं? तो इसके पीछे विभिन्न अर्थशास्त्रियों एवं नीति निर्माताओं का कहना है कि भारत एक ऐसा देश है, जिसकी अधिकांश आबादी युवा वर्ग की है। **एक वेबसाइट के अनुसार-** आज भारतीय अर्थव्यवस्था, जिस प्रकार से आर्थिक विकास के पथ पर अग्रसर हो रही है, उसका कारण भारत की 1.4 बिलियन जनसंख्या है, जिसमें से 26% 14 वर्ष से कम तथा 15 से 64 वर्ष की उम्र के बीच 67% आबादी है, जो देश को युवाओं का देश बनाती है।(14) इसके अलावा भारत की अधिकांश आबादी उच्च-मध्यम आय वाली है, जिसमें खर्च करने की प्रवृत्ति अधिक है और इसी खर्च की प्रवृत्ति की वजह से देश में विदेशी निवेश आएगा। इसी निवेश को ध्यान में रखते हुए **भारतीय आर्थिक नीति निर्माताओं का कहना है कि-**अगले 2 वर्षों में, देश में निवेश बढ़ने की संभावना है, जोकि देश को निरंतर घरेलू मांग आधारित विकास के पथ पर ले जाने में आवश्यक गति प्रदान करेगा।

अतः कहा जा सकता है कि वर्ष 2023 में, जो वैश्विक मंदी की संभावना व्यक्त की है, उसकी वजह से भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोई भी प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है।

निष्कर्ष

वर्ष 2023 में वैश्विक स्तर पर बढ़ती मंदी की संभावना का भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोई भी प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है। यह जानकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। ऐसा क्यों और कैसे?, तो इसके संबंध में, मैंने कुछ बिंदु निर्धारित किए है, जो कथित तौर पर निष्कर्ष की सार्थकता को स्पष्ट करेंगे।

1. भारत की तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या, जो की वस्तुओं व सेवाओं की मांग को तीव्र गति से बढ़ाने में सक्षम होगी।
2. देश में बढ़ती हुई आबादी, वैश्विक स्तर के बाजार को प्रोत्साहित करेगी, जिससे निवेश को बढ़ावा मिलेगा।
3. भारत सरकार द्वारा संचालित किए गए डिजिटल इंडिया अभियान और मेक इन इंडिया अभियान, जिसकी वजह से आईटी क्षेत्र तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इलेक्ट्रिकल्स क्षेत्र का विस्तार हुआ ,ने भारतीय अर्थव्यवस्था को तीव्र गति से आगे बढ़ाने में सहयोग दिया है।

आपको बता दें कि भारत की आईटी निर्यात से लगभग 145 अरब डॉलर की आय स्रजित होती है, जो विश्व में सबसे अधिक है। इसीलिए भारत आर्थिक दृष्टि से मजबूत होता जा रहा है और यही वजह है कि वर्ष 2023 में आने वाली मंदी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोई भी नकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना नहीं है।

References

1.https://marketbusinessnews.com/financial-glossary/economic-crisis.

2.Recession in India, All You Need to Know Data Trained., (www.datatrained.com) 17 Jan 2023, By-Sonal Meenu Singh.

3.IBID.

4.Patterson, E.M. (1915) The Annals of the American Academy of Political and Social Science., The American Industrial Opportunity., Vol.59, May 1915, PP.133-147.

5.Sharp, Long-Lasting Slowdown, to Hit Developing Countries Hard, (www.worldbank.org) 10 Jan. 2023.

6.Georgieye, Kristalina, Geeta Gopinath and Ceyla, Pazarbasioglu., "Why We Must Resist Geoeconomic Fragmentation and How" IMF Blog, 22 May 2022, https://www.imf.org/en/blogs/articles/2022/05/22/blog-why-we-must-resist-geoeconomic-fragmentation.

7.India has Zero Probability of Falling Into Recession in 2023-Report., (www.organiser.com), 18 April 2023.

8.Global Recession 2023:-What is its Impact on India., (www.currentaffairs.adda24.com), 14 April 2023, By-Madhavi Gaur.

9.To See The Reference Number (7).

10.To See The Reference Number (7).

11.To See The Reference Number (2).

12.To See The Reference Number (2).

13.Morgan Stanley., "India Impending Economic Boom", Accessed April 18, 2023.

14.Global Financial Crisis and Its Impact on the Indian Economy., (www.timesofindia.indiatimes.com) 7 May 2023.